



राजपत्र, हिमाचल प्रदेश (असाधारण)

हिमाचल प्रदेश राज्यशासन द्वारा प्रकाशित

शिमला, शनिवार, २५ जुलाई, १९९२/३ श्रावण, १९१४

हिमाचल प्रदेश सरकार

कामिक विभाग (नि-१)

अधिसूचना

शिमला-२, २२ जून, १९९२

संख्या : का०(नि-१)ए(२)-२/९०.—राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश फौजदारी प्रक्रिया संहिता, १९७३ की धारा २० (१) में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित एच०ए०एस०/हिमाचल प्रदेश प्रशासनिक सेवा अधिकारियों (प्रशिक्षणाधीन) को कार्यकारी दण्डाधिकारी नियुक्त करने तथा कार्यकारी दण्डाधिकारी की शक्तियों को तत्काल से शिमला जिला में प्रयोग करने के सहर्ष आदेश देते हैं जो गृह विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा जारी अनुदेशों

समाचार पत्र के 11-5-84 दिनांक 4-11-84 तथा 28-12-1984 के संशुद्ध शीर्ष —

क्रमांक	व्यक्ति का नाम	संस्थापिका
1.	श्री राम बहादुर सिद्धांत सिंह	सिद्धांत सिंह
2.	श्री राम बहादुर (1905-80) सिद्धांत सिंह	सिद्धांत सिंह
3.	श्री राम बहादुर (1905-80) सिद्धांत सिंह	सिद्धांत सिंह
4.	श्री राम बहादुर (1905-80) सिद्धांत सिंह	सिद्धांत सिंह
5.	श्री राम बहादुर (1905-80) सिद्धांत सिंह	सिद्धांत सिंह
6.	श्री राम बहादुर (1905-80) सिद्धांत सिंह	सिद्धांत सिंह
7.	श्री राम बहादुर (1905-80) सिद्धांत सिंह	सिद्धांत सिंह
8.	श्री राम बहादुर (1905-80) सिद्धांत सिंह	सिद्धांत सिंह

समाचार पत्र के यह व्यक्ति काल में एक माह की अवधि तक के कार्य हैं।

हस्ताक्षर—
विजय सिंह बर्मन

सर्व सम्पत्ति विभाग

अहिंसा

दिनांक-2 16 जुलाई, 1992

समाचार पत्र के 11-5-84 दिनांक प्रदेश के राज्यपाल को यह प्रतीत होता है कि हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा सरकार 1992 में सर्वजनिक प्रयोजन हेतु नामित महान् आर, नौक उन्मुख महान् उन्मुख आर कहने में राज्य सरकार केन्द्र की स्थापना हेतु भूमि अर्जित करना अपेक्षित है। इससे, महान् यह अपेक्षित है कि उक्त प्रयोजन में जैसा कि निम्न विवरण में विहित किया गया है उन्मुख प्रयोजन के लिए भूमि का अर्जित अपेक्षित है।

1. यह अपेक्षित है कि सर्व व्यक्तियों को जो इनसे सम्बन्धित हो सकते हैं, जो जल्द ही के लिए भूमि अर्जित अपेक्षित 1992 की धारा 4 के उपबन्धों के अन्तर्गत जारी की जाती है।

2. उन्मुख द्वारा द्वारा सर्व व्यक्तियों को प्रयोजन करते हुए, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल इन समाचार पत्र के कर्तव्य में अर्जित सर्व व्यक्तियों उनके कर्मचारियों और धर्मिकों को इनके जो जितने भी

भूमि में प्रवेश करने और सर्वेक्षण करने तथा उप धारा द्वारा अपेक्षित अथवा अनुमत अन्य सभी कार्यों को करने के लिए सहर्ष प्राधिकार देते हैं ।

4. कोई भी ऐसा हितवद्ध व्यक्ति जिसे उक्त परिसर में कथित भूमि के अर्जन पर कोई आपत्ति हो तो वह अधिसूचना के प्रकाशित होने के 30 दिनों की अवधि के भीतर लिखित रूप में भूमि अर्जन समाहर्ता (उप-मण्डल अधिकारी ना0) धर्मशाला के समक्ष अपनी आपत्ति दायर कर सकता है ।

विस्तृत विवरणी

जिला : कांगड़ा

तहसील : धर्मशाला

महल 1	माँजा 2	खसरा नं० 3	रकबा हेक्टेयरों में 4	5	6
ध्याल	धर्मशाला	544	0	22	05
		544/1	0	19	73
		544/2	0	21	98
	कित्ता ..	3	0	63	76

आदेश द्वारा,

हस्ताक्षरित/-

आयुक्त एवं सचिव ।

भाषा एवं संस्कृति विभाग

अधिसूचनाएं

शिमला-2, 23 जून, 1992

संख्या भाषा-गफ0 (3) 3/85.—इन विभाग की समसंख्यक अधिसूचना दिनांक 27 अगस्त, 1990 के अधिक्रमण में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश हिन्दू सार्वजनिक धार्मिक संस्था और पूर्ण विन्यास नियम-3 के पठित, हिमाचल प्रदेश हिन्दू धार्मिक संस्था तथा पूर्ण विन्यास अधिनियम, 1984 का अधिनियम संख्या : (18) की धारा 3 की उप-धारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए श्री राजीव शंकर, उप-मण्डलीय अधिकारी (नागरिक) पांचटा, जिला सिरमौर का उपस्थित सिरमौर की सहायता करने के लिए मन्दिर ठाकर द्वारा देई साहिवा जो पांचटा, जिला सिरमौर के लिए सहायक आयुक्त के रूप में तुरन्त सहर्ष नियुक्त करते हैं ।

शिमला-171002, 24 जून, 1992

संख्या : भाषा-गफ0 (4)-1/92.—हिमाचल प्रदेश हिन्दू सार्वजनिक धार्मिक संस्था और पूर्ण विन्यास अधिनियम, 1984 (1984 का 18) के नियम 3 के साथ पठित हिमाचल प्रदेश हिन्दू सार्वजनिक धार्मिक संस्था और पूर्ण विन्यास अधिनियम, 1984 की धारा 3 की उप-धारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, श्री जे0के0 शर्मा,

उप-मण्डलाधिकारी (नागरिक) अम्ब को, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल, उपायुक्त को सहायता करने के लिए आयुक्त के रूप में तुरन्त सहर्ष नियुक्त करते हैं ।

शिमला-171002, 24 जून, 1992

संख्या : भाषा-एफ0 (4)-1/92.--हिमाचल प्रदेश हिन्दू सार्वजनिक धार्मिक संस्था और पूर्ण विन्यास अधिनियम, 1984 (1984 का 18) की धारा 3 की उप-धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश श्री आर0 क0 जैन, आई0 ए0 एस0 उपायुक्त, जिला ऊना को उनके सम्बन्धित कार्यक्षेत्र में उक्त अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के द्वारा अथवा अध्याधीन प्रदत्त अथवा न्यस्त शक्तियों और कार्यों का निष्पादन करने के प्रयोजन से तत्काल आयुक्त के रूप में नियुक्त करते हैं ।

आदेश द्वारा,

देव स्वरूप,
आयुक्त एवं सचिव ।